International Journal of Sanskrit Research 2023; 9(2): 160-166

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2023; 9(2): 160-166
© 2023 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 13-12-2022
Accepted: 16-01-2023

कीर्ति
शोधछात्रा, पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखंड, भारत

Corresponding Author:
कीर्ति
शोधछात्रा, पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखंड, भारत

वाल्मीकि रामायणानुसार महावीर हनुमान् के उड्डयन प्रसङ्ग का विश्लेषण

कीर्ति

सारांश

सहस्रों वर्षों से अनेकानेक विद्याओं की भूमि रही यह भारत धरा स्वयं में अनन्त ज्ञान समेटे हुए है। वाल्मीकि रामायण में अनेक ऐसे रहस्य हैं जिन्हें पढ़कर वर्तमान मानव कदाचित् उन पर विश्वास नहीं करता परन्तु ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण प्रसङ्ग ज्ञान के अभाव में रहस्य ही बने हुएं हैं। उन्हीं विशिष्ट प्रसङ्गों को वैज्ञानिक विश्लेषण की तुला में तोलकर सत्य तक पहुंचने का प्रयास महावीर हनुमान् के उड्डयन प्रसंग में किया गया है। महावीर हनुमान् का जो वर्णन महर्षि वाल्मीकि ने किया है वह उनके प्रेरणीय दिव्य-भव्य व्यक्तित्व को प्रकट करता है। ज्ञान के साथ अध्यात्म के दिव्य संगम का यह मेल मानव तन की अलौकिक शक्तियों या कहें कि पारलौकिक अदृश्य ईश्वरीय आभा से प्राप्त बल का ज्ञान कराता है। यह कहना कदापि गलत नहीं है कि यदि भौतिक ज्ञान लोक में विशिष्टता की पदवी देता है तो योग-अध्यात्म ज्ञान का मिलन मानव देह को ईश्वर के ऐश्वर्य से युक्त कर उसे स्वयं भगवत्ता की प्राप्ति कराता है और महावीर पूज्य हनुमान् जी का चरित्र हमें यही जताता है।

कूटशब्दः वाल्मीकि, वाल्मीकि रामायण, रामायण, हनुमान् , महावीर हनुमान्, उड्डयन, उड़ना, सुन्दरकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, योगदर्शन, सिद्धि, विभूति, युद्धकाण्ड

प्रस्तावना

युगों- युगों से वाल्मीकि रामायण विश्व के लिए संस्कृति-सभ्यता व ज्ञान-विज्ञान का मुख्य स्रोत रही है। रामायण में महर्षि वाल्मीकि ने एक आदर्श राजा का चित्रण करते हुए उनके अप्रतिम व्यक्तित्व को दर्शाया है, जिसका वर्णन स्वयं ब्रह्मर्षि नारद करते हुए कहते हैं-

श्रीराम जो सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञ[1] हैं, जो समाधिस्थ योगी[2] हैं, जो गाम्भीर्य व मर्यादा की मूर्ति हैं, जिन्हें धनुर्विद्या में अप्रतिम कौशल प्राप्त है, जो देवताओं के पूज्य हैं, अपने धर्म-कर्म व सभी जनों के रक्षक हैं, जिनमें क्षमा पृथ्वी के समान है, जो स्मृतिमान् और प्रतिभा-सम्पन्न, उदार हृदय वाले तथा जो सभी गुणों से परिपूर्ण हैं और सम्पूर्ण लोक के प्रिय हैं।[1] ऐसे अप्रतिम व्यक्तित्व को कौन धारण नहीं करना चाहेगा !

महर्षि वाल्मीकि ने जिस प्रकार श्रीराम का दिव्य व्यक्तित्व दर्शाया है। उसी प्रकार श्रीराम के प्रियभक्त महावीर हनुमान् की भक्ति-भावना, श्रद्धा व उनकी अप्रतिम विद्वत्ता के साथ-साथ उनके विविध पराक्रमों को भी दर्शाया

[1] धर्मज्ञः सत्यसन्धश्च प्रजानां च हिते रतः।
यशस्वी ज्ञानसम्पन्नः शुचिर्वश्यः समाधिमान्॥
रक्षिता स्वस्य धर्मस्य स्वजनस्य च रक्षिता।
वेदवेदाङ्गतत्त्वज्ञो धनुर्वेदे च निष्ठितः॥
सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः स्मृतिमान् प्रतिभानवान्।
सर्वलोकप्रियः साधुरदीनात्मा विचक्षणः॥

है। विश्व का आदिकाव्य कहा जाने वाला ग्रन्थ, कथामात्र से ही रोचक नहीं है अपितु यहाँ प्राप्त वैज्ञानिक तकनीकि व शस्त्रों-शास्त्रों का ज्ञान, तत्कालीन मानवजाति की आध्यात्मिक, बौद्धिक व शैक्षणिक उच्चता व जड़-चेतन जगत् की दिव्यता का अलौकिक दर्शन कराता है। यही अलौकिकता महावीर हनुमान के प्रसंग में भी दृष्टिगत होती है। कहते हैं कि यदि हनुमान् न होते तो माता सीता की खोज यथासमय सम्भव न हो पाती । यह सत्य है कि हनुमान् जी कोई असाधारण पुरुष रहे होंगे अन्यथा श्रीराम का वाल्मीकि रामायण में विभिन्न स्थानों पर वीर ब्रह्मचारी हनुमान् जी का उड़कर सीता माता की खोज करना, संजीवनी बूटी लाना न बताया गया होता। अतः हम कह सकते हैं कि हनुमान् जी में कोई न कोई ऐसी विशेषता अवश्य थी जिसके तहत् महर्षि वाल्मीकि ने अनेक बार उनके उड़ने के प्रसंग को वर्णित किया है। विभिन्न विद्वानों ने इस पर अलग-अलग शंकाएं की हैं। हालांकि यह ऐतिहासिक प्रसंग है परंतु इतिहास को हम ऐतिहासिक ग्रंथों के पर्यालोचन व दर्शनगत सिद्धांतों के वैज्ञानिक पक्षों का विश्लेषण-पूर्वक विवेचन करके स्पष्ट करेंगे।

महावीर हनुमान् का परिचय

महावीर हनुमान् माता अञ्जना व वायुदेव के औरस पुत्र व वानरराज केसरी के क्षेत्रज पुत्र थे। अतः वायुदेव के समस्त गुण हनुमान् जी को प्राप्त हुए।

सत्वं केसरिणः पुत्रः क्षेत्रज्ञो भीमविक्रमः।
मारुतस्यौरसः पुत्रस्तेजसा चापि तत्समः ॥[3]

यहाँ गुणों से आशय तेज व बल से है। स्वयं किष्किन्धा-काण्ड में जाम्बवन्त जी हनुमान् जी को उनके बल का संज्ञान कराते हुए, उनके पिता वायुदेव व माता अञ्जना का यह वृतांत बताते हुए कहते हैं -

वीर्यवान् बुद्धिसम्पन्नस्तव पुत्रो भविष्यति ॥
महासत्त्वो महातेजा महाबलपराक्रमः।
लङ्घने प्लवने चैव भविष्यति मया समः॥[4]

यहाँ वायुदेव अपने पुत्र के गुणों को माता अञ्जना को बताते हैं की मेरा पुत्र वीर्यवान्, बुद्धिमान्, तेजस्वी व महाबलशाली, पराक्रमी होगा जो उड़ने व तैरने में मेरे समान होगा। इससे स्पष्ट है कि वायुदेव इन सभी क्रियाओं मे पारंगत थे। अतः हनुमान् जी को उड़ने /तैरने की शिक्षा वायुदेव द्वारा ही प्राप्त हुई । जाम्बवन्त जी महावीर हनुमान् को "सर्वशास्त्रविद" कहते हुए उनकी विद्वत्ता के साथ ही उनके अतिबलशाली होने का गुणगान करते हैं तथा उनको समुद्र पार करने के लिए प्रेरित करते हैं –

वीरवानरलोकस्य सर्वशास्त्रविदां वर।
तूष्णीमेकान्तमाश्रित्य हनूमन् किं न जल्पसि ॥
हनूमन् हरिराजस्य सुग्रीवस्य समो ह्यसि।
रामलक्ष्मणयोश्चापि तेजसा च बलेन च ॥[5]

सम्पूर्ण वानरों के वीरशीरोमणि तथा समस्त शास्त्र वेत्ताओं में श्रेष्ठ हनुमान्! तुम एकान्त में आकर चुपचाप क्यों बैठे हो? कुछ बोलते क्यों नहीं ? हनुमान् हरीराज तुम सुग्रीव के समान हो, और तुम्हारा बल व तेज श्रीराम-लक्ष्मण के समतुल्य है। इस हेतु तुम्हें समुद्र पार कर प्रभु श्रीराम की कार्य सिद्धि करनी ही है।

हनुमान् जी की असाधारणता व विशिष्टता

महावीर हनुमान् एक कृतनिश्चयी, आदित्यब्रह्मचारी, परमबलवान्, बुद्धिमान्, नीतिशास्त्र-पारंगत, परममित्र, सहायक तथा वेदों और व्याकरण के प्रकाण्ड-पंडित व एक अद्वितीय तपस्वी थे । उनकी इन विशेषताओं का वर्णन ऋष्यमूक पर्वत पर, तपस्वी रूप में प्रथम भेंट के अनन्तर श्रीराम लक्ष्मण जी को बताते हुए कहते हैं –

नानृग्वेदविनीतस्य नायजुर्वेदधारिणः।
नासामवेदविदुषः शक्यमेवं विभाषितुम् ॥
नूनं व्याकरणं कृत्स्नमनेन बहुधा श्रुतम्।
बहु व्याहरतानेन न किञ्चिदपशब्दितम् ॥[6]

यह हनुमान् उच्चकोटि के विद्वान् हैं, क्योंकि ऋग्वेद के अध्ययन से अनभिज्ञ, यजुर्वेद के ज्ञान से हीन और सामवेद के बोध से शून्य व्यक्ति इस प्रकार सुंदर भाषा में वार्तालाप नहीं कर सकता तथा निश्चय ही इन्होंने व्याकरण का कई बार अध्ययन किया है। यही कारण है कि इनके इतने समय के वार्तालाप में इन्होंने कोई भी त्रुटि नहीं की। इससे यह भली-भांति स्पष्ट होता है कि वेदों का विद्वान् , तत्त्वज्ञ व व्यवहार कुशल संयमी व्यक्ति एक उच्च कोटि का साधक तपस्वी अवश्य रहा होगा और जो साधक तपस्वी सिद्धपुरुष होगा उसमें विशिष्टता अवश्य होंगी। इन सब तथ्यों से यह तो पूर्णतः स्पष्ट हो चुका है कि हनुमान् जी बल-विद्या-तेज में असाधारणता को प्राप्त थे।

महावीर हनुमान् का लंका पहुँचना

कुछ विद्वान् हनुमान् जी का यान द्वारा जाना बताते हैं, कुछ नौका द्वारा, कुछ तैरकर व कुछ का मानना है कि वे उड़कर लंका पार गए।

यं यं देशं समुद्रस्य जगाम स महाकपिः।
स तु तस्याङ्गवेगेन सोन्माद इव लक्ष्यते ॥[7]

महावीर हनुमान् समुद्र के जिस किसी भाग से निकलते थे, वह भाग उनके अतुलित वेग से खलबलाता हुआ सा जान पड़ता था अर्थात् वह समुद्र का भाग विक्षुब्धता को प्राप्त होता था तथा बहुफेन युक्त व अतिशय शब्द करता था।

सागरस्योर्मिजालानामुरसा शैलवर्ष्मणाम्।
अभिघ्नन्तु महावेगः पुप्लुवे स महाकपिः ॥[8]

अद्भुद् वीरत्व प्राप्त हनुमान् पर्वत समान शरीर वाले ,वक्षस्थल से सागर की लहरों को चीरते हुए अत्यन्त वेग से जाते थे। इससे यह ज्ञात होता है कि हनुमान् जी यदि वक्षस्थल से समुद्र की लहरों को चीरकर व समुद्र में हलचल व विक्षुब्धता प्रदान कर रहे हैं तो सम्भवतः वे तैरकर भी गए हो क्यों कि वक्षस्थल से समुद्र की लहरों को चीरने से यही आशय निकलता है कि वे समुद्र से ज्यादा ऊंचाई पर न उड़े हों जिससे लहरों का उनके वक्षस्थल तक आना संभव हो। यान व नौका की मान्यताओं को देखें तो यह विचार करना चाहिए कि यदि हनुमान् जी किसी यान विशेष से जाते तो महर्षि वाल्मीकि ने जिस प्रकार पुष्पकविमान का वर्णन किया है वैसा ही वर्णन यहां भी किया होता, परंतु ऐसा कुछ प्राप्त नहीं होता इसलिए यह धारणाएं पूर्णतः काल्पनिक व तर्कहीन हैं।

श्वेताभ्रघनराजीव वायुपुत्रानुगामिनी।
तस्य सा शुशुभे छाया पतिता लवणाम्भसि॥
शुशुभे स महातेजा महाकायो महाकपिः।
वायुमार्गे निरालम्बे पक्षवानिव पर्वतः॥[9]

समुद्र में गिरी हुई पवनपुत्र का अनुसरण करने वाली उनकी छाया, श्वेत बादलों की पंक्ति के समान शोभा पाती थी और वे परम तेजस्वी महाकाय, महाकपि हनुमान् आलम्बनहीन वायुमार्ग में पंखधारी पर्वत के समान जान पड़ते थे। महर्षि वाल्मीकि ने यहाँ हनुमान् जी को स्पष्टतः "वायुमार्गे निरालम्बे" व "तस्य सा शुशुभे छाया पतिता लवणाम्भसि" कहकर यह सुस्पष्ट कर दिया कि हनुमान् जी आकाश / वायुमार्ग से लंका नगरी गए थे। क्योंकि "पतिता छाया" छाया समुद्र में तभी दिखेगी जब समुद्र के ऊपर कोई होगा यानि हनुमान् जी उड़े थे यह स्पष्ट हुआ।
युद्धकाण्ड के 1 सर्ग में श्रीराम हनुमान् जी की प्रशंसा में कहते हैं -

कृतं हनुमता कार्यं सुमहद् भुवि दुष्करम्।
मनसापि यदन्येन न शक्यं धरणीतले॥
न हि तं परिपश्यामि यस्तरेत महोदधिम्।
अन्यत्र गरुडाद्वायोरन्यत्र च हनूमतः॥[10]

केसरीपुत्र हनुमान् ने बड़ा भारी कार्य, अत्यन्त दुष्कर कार्य किया है। भूतल पर ऐसा होना कठिन है। समस्त भूमण्डल में दूसरा कोई ऐसा कार्य करने की बात मन में सोच भी नहीं सकता है तथा गरुडराज, वायुदेव (हनुमान् जी के पिता) और महावीर हनुमान् को छोड़कर दूसरे किसी को मैं ऐसा नहीं देखता, जो महासागर को पार कर सके। अतः वेदवेत्ता, महाबलशाली, महातेजवान्, व्याकरण के पण्डित, परमपराक्रमी व्यक्ति का श्रीराम द्वारा प्रशंसा किया जाना स्वाभाविक है।
इसी प्रसंग में महावीर हनुमान् का संजीवनी आदि औषधियाँ लेकर आना भी उनके उड़ने को परिपुष्ट करता है। यह प्रसंग वाल्मीकि रामायण में दो स्थानों पर प्राप्त होता है। युद्धकाण्ड ७४ सर्ग में जहाँ समस्त वानर सेना व अन्य सभी योद्धाओं के घायल होने पर जाम्बवन्त जी द्वारा हनुमान् जी को औषधियाँ लेने के लिए हिमालय पर भेजने का वर्णन प्राप्त होता है-

ततोऽब्रवीन्महातेजा हनुमन्तं स जाम्बवान्।
आगच्छ हरिशार्दुलवानरांस्त्रातुमर्हसि॥
नान्यो विक्रमपर्याप्तस्त्वमेषां परमः सखा।
त्वत्पराक्रमकालोऽयं नान्यं पश्यामि कञ्चन॥[11]

तदनन्तर परमतेजस्वी जाम्बवन्त ने हनुमान् जी से कहा - वानरशार्दूल ! आओ और वानरों के प्राण बचाओ। हे वीर! तुम इन सबके परममित्र हो, दूसरे तुममें पराक्रम भी इतना है कि, तुम इनके प्राणों की रक्षा कर सकते हो। यह समय भी ऐसा है कि, तुम्हें अपने पराक्रम से काम लेना चाहिए अथवा ये तुम्हारे ही पराक्रम का समय है क्योंकि ऐसा दूसरा तो मुझे कोई यहाँ दिखाई नहीं दे रहा॥

गत्वा परममध्वानमुपर्युपरि सागरम्।
हिमवन्तं नगश्रेष्ठं हनुमान्गन्तुमर्हसि॥[12]
तस्य वानरशार्दुल चतस्रो मूर्ध्नि सम्भवाः।
द्रक्ष्यस्योषधयो दीप्ता दीपयन्त्यो दिशो दश॥
मृतसञ्जीवनीं चैव विशल्यकरणीमपि।
सावर्ण्यकरणीं चैव संधानकरणीं तथा॥[13]

हे हनुमन्! तुम समुद्र के ऊपर-ऊपर बहुत दूर तक जाकर पर्वतश्रेष्ठ हिमालय पर चले जाओ। उस पर्वत शिखर पर तुमको चार औषधियाँ मिलेंगी। वे बड़ी चमकीली हैं यहाँ तक कि उनकी चमक से दो दशाएं प्रकाशित रहती हैं। (उन चारों के नाम हैं) - मृतसञ्जीवनी , विशल्यकरणी, सावण्यकरणी और सन्धानकरणी।

स योजनसहस्राणि समतीत्य महाकपिः।
दिव्यौषधिधरं शैलं व्यचरन्मारुतात्मजः॥[14]

पवनपुत्र हनुमान् १ हजार योजन का मार्ग पार कर औषधियुक्त उस पर्वत पर पहुँचकर चारों ओर उन जड़ी बूटियों की खोज में घूमने लगे।
यहाँ वर्णित वृतांत में सभी श्लोकों द्वारा यह ज्ञात होता है कि जाम्बवन्त भी एक सुयोग्य वैद्य थे और हनुमान् जी के द्वारा पार किए गए वायुमार्ग की कुल दूरी १००० योजन दी हुई है, जो यह बताता है कि अवश्य ही हनुमान् जी उड़ने में असाधारण थे तथा द्वितीय प्रसंग जो उनके हिमालय पर पुनः जाने का वर्णन करता है। वह वा. रा. के १०२ सर्ग में लक्ष्मण जी की शक्ति की चिकित्सा हेतु सुषेण वैद्य द्वारा हनुमान् जी को पुनः हिमालय भेजना व औषधियां लेकर आने का वर्णन प्राप्त होता है -

तं विमोक्षयितुं वीरश्चापमायम्य लक्ष्मणः।
रावणं शक्तिहस्तं तं वै शरवर्षैरवाकिरत्॥[15]

रावण द्वारा विभीषण पर शक्ति प्रयोग होता देख, प्राण-रक्षा हेतु लक्ष्मण उनको बचाने के लिए स्वयं विभीषण के सामने जा खड़े हुए और धनुष पर बाण चढ़ाकर शक्ति लिए हुए रावण पर बाणों की वर्षा कर दी। तदनन्तर रावण ने विभीषण पर शक्ति प्रयोग त्यागकर लक्ष्मण जी पर

मयदानव की बनायी हुई वह शक्ति छोड़ दी। जिससे वे अचेत हो पृथ्वी पर गिर पड़े।

साक्षिप्ता भीमवेगेन शक्राशनिसमस्वना।
शक्तिरभ्यपतद्वेगाल्लक्ष्मणं रणमूर्धनि॥[16]

भयंकर वेग से फैकी हुई और वज्र के समान सनसनाती वह शक्ति बड़ी तीव्रता से रणक्षेत्र में खड़े हुए लक्ष्मण पर लगी।
अतः इस प्रसंग के अनन्तर लक्ष्मण जी की चिकित्सा व प्राण रक्षा के लिए सुषेण वैद्य ने वही औषधियाँ लाने के लिए हनुमान् जी से कहा जो जाम्बवन्त द्वारा बताई व पूर्व में प्रयुक्त की गई थीं।

सौम्य शीघ्रमितो गत्वा शैलमोषाधिपर्वतम्।
पूर्वं ते काथितो योऽसौ वीर जाम्बवता शुभः॥
दक्षिणे शिखरे तस्य जातामोषधिमानय।
विशल्यकरणीं नाम्ना सावर्ण्यकरणीं शुभाम्॥
संजीवकरणीं चापि तथा संजीवनीमपि।
संधानकरणीं चापि गत्वा शीघ्रमिहानय॥[17]

हे सौम्य! यहाँ से तुम जाओ और जाम्बवन्त ने जिस पर्वत का पता तुम्हें पहले बतलाया था, उस औषधि पर्वत पर जाकर उस पर्वत के शिखर पर लगी हुई औषधियों को ले आओ। इन बूटियों में से एक तो घाव में चुभे हुए बाण आदि को निकालने वाली विशल्यकरणी नाम की बूटी है और दूसरी सवर्णकरणी (घाव की खाल को त्वचा जैसे रंग का करने वाली) है, तीसरी का नाम संजीवनी है (नया जीवन देने वाली) है और चौथी का नाम सन्धानकरणी (घाव को भरने वाली) है। अतः तुम जाकर इनको ले आओ।
वाल्मीकि रामायणानुसार हनुमान् जी का हिमालय जाना दो बार वर्णित होता है जो सामान्य कभी चर्चा का विषय नहीं रहा। आम जनमानस में बहुत कम ही यह वृतांत जानते होंगे। प्रसंगानुसार यह वृतांत हनुमान् जी के वायुमार्ग से गमन का (उड़ने के विषय को और भी पुष्ट करता) है। इन सभी प्रमाणों से ये भी सुस्पष्ट होता है कि जाम्बवन्त भी एक सुयोग्य वैद्य रहे तथा जो जनमानस में कथा वृतांत प्रचलित है वह पूर्णतः पृथक है। अत: यहाँ वाल्मीकि ही सर्वोपरि प्रमाण हैं।

समुद्र माप या दूरी आखिर कितनी रही होगी ?

महावीर हनुमान् ने कितनी दूरी तय की यह आज के भौगोलिक स्थिति के अनुसार देखें तो लंका से रामेश्वरम तक का मार्ग या रामसेतु की लंबाई लगभग ४८ कि.मी. है परंतु वाल्मीकि रामायणनुसार हनुमान् जी के समुद्र पार करने की दूरी १०० योजन बताई है।

योजनानां शतं श्रीमांस्तीर्त्वाप्युत्तमविक्रमः।
अनि:श्वसन् कपिस्तत्र न ग्लानिमधिगच्छति॥
शतान्यहं योजनानां क्रमेयं सुबहुन्यपि।
किं पुनः सागरस्यान्तं संख्यातं शतयोजनम्॥[18]

उत्तम पराक्रमी महाबलशाली हनुमान् सौ योजन लाँघकर भी वहाँ लम्बी सांस नहीं खींच रहे थे, और न ग्लानि का ही अनुभव कर रहे थे। इसके विपरीत वे यह सोच-विचार रहे थे कि मैं सौ-२ योजनों के अनेकों समुद्रों को पार कर सकता हूँ, फिर इन गिने- गिनाए १०० योजन को पार करना कौन सी बड़ी बात है।
इससे पृथक् बालकाण्ड में महर्षि नारद शतयोजन समुद्र पार करने की बात संक्षिप्त राम चरित्र में स्वयं बताते हुए कहते हैं -

ततो गृध्रस्य वचनात् सम्पातेर्हनुमान् बली।
शतयोजनविस्तीर्णं पुप्लुवे लवणार्णवम्॥[19]

अर्थात् तत्पश्चात् सम्पाति नामक गृध्र के कहने से बलवान हनुमान् जी शत-योजन विस्तार वाले समुद्र को लांघ गए।
अतः वाल्मीकि रामायण में पृथक्-पृथक् स्थानों पर शत-योजन समुद्र पार करने का वर्णन मिलता है। वर्तमान समय में कि. मी. की माप प्रचलन में है परन्तु यहाँ हमने प्राचीन समय में सूर्य सिद्धांत के आधार व वर्तमान खगोलविदानुसार इसे जानने समझने का प्रयत्न किया है।

सूर्य सिद्धांतानुसार

१ योजन – ८ कि. मी.[20]
१०० योजन – ८०० कि. मी.

वर्तमान् खगोलविदानुसार

१ योजन – १३ -१६ कि. मी.
१०० योजन – १३००-१६०० कि. मी.[21]

वस्तुतः देखा जाए तो आज की स्थिति के अनुसार दोनों ही मापों को सही नहीं ठहराया जा सकता क्योंकि वर्तमान में रामसेतु की दूरी ४८ किलोमीटर है और यदि कोई भ्रमणशील हो तथा इतस्ततः भ्रमण करके भी जाए तब भी ८०० किलोमीटर या १३००/१६०० किलोमीटर कि यह दूरी अनिश्चित व अप्रमाणिक ही प्रतीत होती है तथा रामेश्वर से श्रीलंका की सागर मार्ग से दूरी २७१ किलोमीटर तथा कहीं-कहीं ३०० किलोमीटर का भी वर्णन है तथा वायुमार्ग से हम विचार करें तो दूरी संभवत: और भी कम हो जाएगी।
अतः यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि भौगोलिक उथल-पुथल समय-समय पर होती ही रहती है जिसके कारण हिमालय श्रृंखला की लंबाई निरंतर बढ़ रही है तथा रामायण का काल वर्तमान साहित्यकार ७३२३ ईसा पूर्व या लगभग ९३१४ ईसा पूर्व बताते हैं, जो कि देखा जाए तो पूर्णतः असंगत है।
रामायण का युग त्रेतायुग माना जाता है। हिंदू कालगणना चतुर्युगी व्यवस्था पर आधारित है। जिसके अनुसार समय अवधि को चार युगों में बांटा गया है -
१) सतयुग -१७२८००० वर्ष
२) त्रेतायुग - १२९६००० वर्ष
३) द्वापरयुग - ८६४००० वर्ष

४) कलयुग - ४३२००० वर्ष[22]

इस गणना के अनुसार रामायण का समय न्यूनतम ८६९१२२ वर्ष (वर्तमान कलियुग के ५१२२ वर्ष + बीते द्वापर के ८६४००० वर्ष मिलाकर) सिद्ध होता है अर्थात् लगभग ८७०००० वर्ष हम मान सकते हैं। यह तो पूर्णतः ज्ञात हो ही चुका है कि रामायण का काल व्यतीत हुए अनेक वर्ष बीत चुके हैं, इतने समय में कुछ न कुछ भौगोलिक परिवर्तन अवश्य हुआ ही होगा। यदि ऐसा नहीं भी संभव हो तो आज हम वर्तमान हिमालय को देख सकते हैं, जिसकी ऊंचाई निरंतर बढ़ रही है। मानवकृत कार्यों से व प्राकृतिक परिवर्तनों से पृथ्वी व ब्रह्मांड में उथल-पुथल (हलचल) होती रहती है। इसे भौगोलिक वेत्ता जन ही बता व ज्ञात कर सकते हैं। इस आधार पर समुद्र गमन की दूरी जितनी भी रही हो परंतु यह सर्वज्ञात है की रामायण कदापि काल्पनिक नहीं है तथा महावीर हनुमान् का लंका उड़कर जाना संभव ही नहीं बल्कि उनके लिए साधारण कार्य रहा है। अन्यथा इतनी बार वाल्मीकि उनके उड़ने का वर्णन न करते।

उड्डयन एक सिद्धि या सिद्धि के रूप में सम्पूर्ण विज्ञान ?

महावीर हनुमान् एक तपस्वी व महान् योगी भी थे, यह पूर्व में जाम्बवन्त जी व श्रीराम जी के कथनों से सर्वविदित हो चुका है। इस आधार पर एक योगी में कौन-कौन सी सिद्धियाँ हो सकती हैं, यह हम योगदर्शन के विभूतिपाद से समझने व जानने का प्रयास करेंगे।

योग दर्शन जो महर्षि पतंजलि द्वारा रचित है तथा महर्षि व्यास द्वारा जिस पर व्यास भाष्य सम्प्राप्त है, इससे अलग राजर्षि भोज ने भी पातञ्जलयोगदर्शनस्थ सूत्रों पर भोजवृत्ति लिखी है। अतः दर्शनगत सिद्धियों -विभूतियों को एक योगी ही प्राप्त कर सकता है।

यथा –

उदानजयाज्जलपङ्ककण्टकादिष्वसङ्ग उत्क्रान्तिश्च ॥[23]

उदान प्राण को विजित करने से जल, पङ्क तथा कण्टकादि में सङ्ग नहीं होता अर्थात् जलादी में योगी का शरीर नहीं डूबता, योगी के शरीर में काँटे आदि नहीं चुभते और वह योगी ऊर्ध्वगति को प्राप्त करता है।

इस सूत्र के व्यासभाष्य में व्यास जी ने सभी पाँच प्राणों के लक्षणों का वर्णन करते हुए उदान के बारे में कहा है - "उन्नयनादुदान आशिरोवृत्तिः" [24] ऊर्ध्वगति कराने वाला उदान प्राण है जो नासिक से शिर तक रहता है अर्थात् उदान प्राण ऊर्ध्वगति करने में विपरीत बल का कार्य करता है। योगी उदान प्राण से इतना बल उत्पन्न कर सकता है कि वह ऊर्ध्वगति कर सके। "उदानः य ऊर्ध्वमनिति" [25] महर्षि दयानंद वेद भाष्य में उदान का लक्षण ऊर्ध्वगति कराने वाला या ऊर्ध्वगति की ओर ले जाने वाला करते हैं। ऐतरेय ब्राह्मण में महीदास ऐतरेय उदान का लक्षण "उदान उदयनीयः " [26] करते हैं उदान नामक प्राण उदयनीय है।

वेद विज्ञान आलोक के अनुसार प्राण नामक रश्मियाँ किसी भी आकर्षण बल को उत्पन्न, प्रेरित व गतिशील करती हैं। उदान रश्मियाँ किसी बल के विपरीत उठने का सामर्थ्य उत्पन्न करती हैं तथा समान रश्मियाँ प्राण उदान रश्मियों को संतुलित करती हैं। इन तीनों द्वारा अन्य रश्मियाँ प्रेरित होती हैं।[27]

उदान का गुण होता है ऊर्ध्वबल उत्पन्न करना उत्क्षेपण बल किसी बल के विपरीत बल उत्पन्न करना कहलाता है। जिससे गुरुत्वबल प्रभावी नहीं हो पाता क्योंकि जिस बल की मात्रा अधिक होगी वह उस दूसरे बल का उत्क्षेपी बल कहलाएगा। अतः हम यह नहीं कह सकते कि ये क्रियाएँ विज्ञान पर आधारित नहीं हैं। यदि हम किसी वस्तु की विशेषता जानने के इच्छुक हैं तो विशेष नामक पदार्थ को जानना होगा। यथा- वैशेषिक दर्शन पदार्थ का ज्ञान कराता है। अतः अध्यात्म हो या भौतिक संसार सब मूल तत्व ईश्वर से ही जुड़े हैं, जब भौतिक एक विज्ञान है तो अध्यात्म एक विज्ञान क्यों नहीं? विशेष तत्व की जिज्ञासा करना व उसे जानना "विशेष ज्ञान" विज्ञान ही है व ईश्वर एक विशेष तत्व है।

यही उड़ने के प्रसंग में भी देखना चाहिए, जैसे हम वायुयान को देखते हैं, बस अन्तर इतना है कि वायुयान एक मनुष्य निर्मित पृथक् साधन है और यह शरीर हमें ईश्वर प्रदत्त साधनों में से है। जो हम संसारिक पदार्थों से कर सकते हैं, वह सब प्राप्त करने की योग्यता व विशेषता इस शरीर में पहले से ही है। ऋषि-महर्षि जो कार्य समाधिस्थ होकर करते थे वही कार्य आज का मानव यन्त्रों से कर रहा है इसलिए उसका ज्ञान पूर्ण नहीं क्योंकि योगीजन समाधिस्थ होकर ईश्वर के सम्पर्क में ज्ञान प्राप्त करते हैं, जबकि आज के वेत्ता स्वयं की जिज्ञासा के बल पर। अतः रामायण काल में विविध ज्ञान-विज्ञान के साधन होने पर भी हनुमान् एक अभूतपूर्ण योगी रहे। योगदर्शनस्थ, सूत्र स्पष्टतः यह बताते हैं कि योगी आकाश में गमन कर सकता है।

कायाकाशयोः सम्बन्धसंयमाल्लघुतूलसमापत्तेश्चाकाशगमनम् ॥[28]

शरीर व आकाश दोनों के सम्बन्ध में संयम करने से योगी आकाश में गमन करता है अर्थात् हल्के रूई आदि पदार्थों में संयम करने से चित्त के तदाकार होने पर 'आकाशगमन' की सिद्धि प्राप्त होती है।

व्यास जी कहते हैं –

"यत्र कायस्तत्राकाशं तस्यावकाशदानात् कायस्य, तेन सम्बन्धः प्राप्तिः। तत्र कृत संयमो जित्वा तत्सम्बन्धं लघुषु वा तूलादिषु आपरमाणुभ्यः समापतिं लब्ध्वा जितसम्बन्धो लघुर्भवति। लघुत्वाच्च जले पादाभ्यां विहरति, ततस्तूर्णनाभितन्तुमात्रे विहृत्य रश्मिषु विहरति। ततो यथेष्टमाकाशगतिरस्य भवतीति"[29]

अर्थात् जहाँ शरीर होता है, वहाँ आकाश होता है। आकाश के द्वारा अवकाश देने से शरीर का उससे सम्बन्ध होता है। यहाँ संयम करने वाला योगी उस सम्बन्ध को जीतकर रूई आदि परमाणु पर्यन्त लघु पदार्थों में समापत्ति को प्राप्त करके उस सम्बन्ध को जीतकर लघु हो जाता है, इस कारण जल पर पैरों से चलता है पश्चात् मकड़ी के जाले के तन्तुओं में विचरण कर किरणों में विचरता है। उससे इच्छानुसार योगी का आकाश में गमन होता है।

यहाँ स्पष्ट कहा है कि योगी आकाश में उड़ सकता है। इससे यह भी ज्ञात हुआ कि महावीर हनुमान् यदि उड़े थे तो उनके उड़ने का एक मात्र कारण उनका एक तपस्वी व उच्चकोटी का योगी होना ही है। जिसकी शिक्षा उन्हें अपने पिता वायुदेव द्वारा प्राप्त हुई। यहाँ यह शंका भी हो सकती है कि योगदर्शनस्थ सूत्र का विभूति पाद समझ से परे है या हमने प्रत्यक्ष ऐसा किसी को नहीं देखा। प्रथमतः प्रमाण स्वरूप महर्षि पतंजलि हैं ही परंतु किसी को अब भी संशय हो तो महर्षि वेदव्यास क्यों कर ऐसा करेंगे। हम योगसूत्रों के कुछ भाग को प्रक्षिप्त बताएं, तो हमें यह भी देखना चाहिए कि वेदव्यास जी एक महान् योगी व अद्वितीय विद्वान् रहे थे। यदि उन्हें पतंजलि पर संशय होता तो वे भाष्य ही न लिखते और राजर्षि भोज की वृति हमें प्राप्त ही न होती।

उपसंहार

हम शंका कर सकते हैं पर समाधान ढूंढ़ना भी हमारा ही धर्म है। शरीर के द्वारा क्या किया जा सकता है क्या नहीं यदि ये सब ऋषिगण बता रहे हैं, तब कोई समस्या ही नहीं है। ये सभी शब्दप्रमाण तो माने जाएंगे परन्तु जब हम योगी बनने का प्रयत्न करेंगे तभी हमें सूत्रों व भाष्यों पर क्रियान्वयन् करने का अवसर प्राप्त होगा और तभी प्रत्यक्ष होगा।

वर्तमान विज्ञान केवल प्रत्यक्ष प्रमाण को आधार मानता है परन्तु प्रत्यक्ष तो उन्होंने ही किया जो परीक्षण करके बताते हैं। पश्चात्वर्ती सभी ने उनके लिखित शब्द प्रमाणों को माना है और उन्हीं को सिद्धान्त रूप में स्वीकार किया है। इस आधार पर वर्तमान विज्ञान का सभी कुछ जो पूर्ववर्ती है शब्दप्रमाण ही हुआ।

यदि महायोगी हनुमान् का उड़ना महर्षि वाल्मीकि प्रमाणों के साथ बार-बार बता रहे हैं तो वह कल्पना प्रसूत कदापि नहीं हो सकता। वाल्मीकि, पतंजलि, व्यास व भोजादि सभी ऋषि-विद्वान् क्या अप्रमाणिक तथ्य व सूत्र हमारे समक्ष रख सकते हैं? आदि विविध प्रश्न यह बताते हैं कि ये सभी वेदवेत्ता किसी वैज्ञानिक से किंचित भी कम नहीं थे बल्कि अनन्त ज्ञानी थे, जिसकी कल्पना करना हमारे लिए कठिन है। अतः हनुमान् जी का ब्रह्मचारी-महावीर-महायोगी विद्वानों में वरणीय, वेदवेत्ता आदि गुणों व विशिष्टताओं से पूर्ण होना यह सत्यापित करता है कि उनके पास अनेक प्रकार की सिद्धियाँ थीं जिनमें आकाशगमन की सिद्धि पर उन्हें महारत प्राप्त थी तथा प्राप्त प्रमाण भी यहीं दर्शाने का बारम्बार प्रयत्न कर रहे हैं कि वे अपने योगबल व ब्रह्मचर्य से तथा पिता द्वारा प्राप्त शिक्षा के बल पर यह बृहद् कार्य करने में सक्षम थे। अत: इस विषय पर विश्लेषणपूर्वक अध्ययन के अनंतर वैज्ञानिक व दार्शनिक दृष्टिकोण द्वारा यही सर्वज्ञात होता है कि यौगिक बल व सिद्धियाँ व्यक्ति को अनेक कार्य करा सकती हैं तथा मानव तन ईश्वर की रचना है। आज तक भी हमें इसके कार्यों-शक्तियों तथा संरचना का पूर्ण ज्ञान नहीं हो पाया है। शोध की प्रवृति है सत्य तक पहुंचना और सत्य, तथ्य व विश्लेषण के अन्वीक्षण का ही पर्याय है। आज भी इस विषय पर चिंतन व शोध चल रहा है और जब तक मनुष्य कि जिज्ञासा रहेगी तब तक आगे भी चलता रहेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. वा. रामायण , बालकाण्ड -१ सर्ग/१५
2. वा. रामायण , बालकाण्ड -१ सर्ग/१२
3. वा.रामायण, बालकाण्ड – ६६ सर्ग/२९,३०
4. वा.रामायण, किष्कि. -६६ सर्ग/१८,१९
5. वा.रामायण, किष्कि. -६६ सर्ग /२ ,३
6. वा.रामायण, किष्कि. - ३ सर्ग/२८,२९
7. वा.रामायण सुन्दर. - १ सर्ग/६८
8. वा. रामायण. सुन्दर. १ सर्ग/६९
9. वा. रामायण सुन्दर. - १ सर्ग/७७,७८
10. वा. रामायण युद्धकाण्ड -1 सर्ग/२,३
11. वा. रा . युद्ध. - ७४ सर्ग/२६,२७
12. वा. रा . युद्ध. - ७४ सर्ग/२९
13. वा. रा . युद्ध. - ७४ सर्ग/३२,३३
14. वा. रा . युद्ध. - ७४ सर्ग/६३
15. वा. रा . युद्ध. - १०१ / २५
16. वा. रा . युद्ध. - १०१ / ३२
17. वा. रा . युद्ध. - १०२ / २१ ,२२,२३
18. वा.रा. सुन्दर. - २ सर्ग /३,४
19. वा.रा. बाल. - १ सर्ग /७२
20. योजन - विकिपीडिया (wikipedia.org)
21. https://hi.m.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B9%E0%A4%BF%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A6%E0%A5%82_%E0%A4%B2%E0%A4%AE%E0%A5%8D%E0%A4%AC%E0%A4%BE%E0%A4%88_%E0%A4%97%E0%A4%A3%E0%A4%A8%E0%A4%BE#:~:text=1%2C000%20%E0%A4%AF%E0%A5%8B%E0%A4%9C%E0%A4%A8%20%3D%201%20%E0%A4%AE%E0%A4%B9%E0%A4%BE%E0%A4%AF%E0%A5%8B%E0%A4%9C%E0%A4%A8%20%3D%2013%2C000%20Km,%E0%A5%A7%2C%20%E0%A4%85%E0%A4%A7%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%BE%E0%A4%AF%20%E0%A4%B7%E0%A4%B7%E0%A5%8D%E0%A4%A0%E0%A4%AE%20%E0%A4%95%E0%A5%87%20%E0%A4%85%E0%A4%A8%E0%A5%81%E0%A4%B8%E0%A4%BE%E0%A4%B0%20%5B%20%E0%A4%B8%E0%A4%82%E0%A4%AA%E0%A4%BE%E0%A4%A6%E0%A4%BF%E0%A4%A4%20%E0%A4%95%E0%A4%B0%E0%A5%87%E0%A4%82%5D
22. विशुद्ध मनुस्मृति ॥१/६९-७३॥ - डॉ. सुरेन्द्र कुमार
23. योगदर्शन ॥३/ ३९॥ - महर्षि पतञ्जलि
24. योगदर्शन व्यासभाष्य -३ /३९
25. महर्षि दयानंद यजुर्वेदभाष्य - ६.२०
26. ऐतरेयब्राह्मण - महिदास ऐतरेय

27. वेद विज्ञान आलोक (ऐतरेय ब्राह्मण भाष्य)- आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक
28. योगदर्शन ॥३/४२॥ - महर्षि पतञ्जलि
29. योगदर्शन व्यास भाष्य -३ /४२